National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 51-54

कालिदास के काव्यों में वाल्मीकिरामायण का प्रभाव

पंकज कुमार शर्मा

शोधच्छात्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भारत।

प्रस्तावना

रामायण आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की रचना है, जिसे आदिकाव्य के रुप में जाना जाता है। रामचरित का वर्णन सात काण्डों में हुआ है। रामायण का उद्भव तमसा नदी के तट पर निषाद द्वारा मारे गये नर क्रौञ्च के वधोपरान्त कौञ्ची पक्षी के विलाप को सुनकर महर्षि वाल्मीकि का शोक श्लोक के रुप में परिणत हो गया। रामायण में अनुष्टुप् छन्द तथा करुण रस की प्रधानता है। कालिदास संस्कृत साहित्य के अद्वितीय महाकवि माने जाते हैं। महाकवि कालिदास ने नाटक,महाकाव्य तथा गीतिकाव्य (खण्डकाव्य) विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। कालिदास ने दो महाकाव्य– कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्, तीन नाटक–मालविकाग्निमित्रम, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् तथा दो गीतिकाव्य ऋतुसंहारम, मेघदूतम् लिखा।

आदिकवि वाल्मीकि से अनेक प्रसङ्गों में कालिदास ने प्रेरणा प्राप्त की। मेघदूतम् में मेघ को दौत्यकर्म में नियोजित करने के मूल हनुमान् के दूतत्व की प्रेरणा वाल्मीकिरामायण से प्राप्त करते हैं वाल्मीकिरामायण के बालकाण्ड के छठें सर्ग के राजवर्णन प्रसङ्ग में दशरथ तथा उनके राज्य का और युद्धकाण्ड के 131वें सर्ग में रामराज्य का जो वर्णन किया गया है उसका प्रतिबिम्ब रघुवंश के राजाओं के शीलवर्णन में स्पष्टतया दिखाई पडता है पुनः युद्धकाण्ड के इसी सर्ग में राम के पट्टाभिषेक का वर्णन हुआ है उसका प्रतिबिम्ब रघुवंश के 17वें सर्ग में वर्णित कुश के पुत्र कुमार अतिथि के राज्यारोहण में अवलोक्य है।रामायण के अयोध्याकाण्ड के 94वें सर्ग में चित्रकूट का जो वर्णन प्राप्त होता है, उसका वर्णन कालिदास के कुमारसम्भव के हिमालय वर्णन के बीज रुप में वर्णित किया गया है। अयोध्याकाण्ड के 117वें सर्ग में सीता के पातिव्रत की जो प्रशंसा की गयी है उसका वर्णन अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अंक में शकुन्तला को दिए गए उपदेश तथा आशीर्वाद में दिखाई पडता है। अरण्यकाण्ड के नवम सर्ग में सीता ने जो धर्मावेदन किया है उसका प्रभाव अभिज्ञानशाकुन्तल के नायक राजा दुष्यन्त के इस वाक्य में दिखाई पडता है– 'अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्'[1] रामायण के अरण्यकाण्ड में वर्णित अत्रिमुनि, सुतीक्ष्ण, महर्षि अगस्त्य इत्यादि के आश्रमों से प्रेरणा प्राप्तकर कालिदास ने आश्रमों आदि का वर्णन किया है जिसका प्रभाव अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अंक में आश्रममृग की अवध्यता के रुप में परिलक्षित होता है। गोदावरी, मन्दाकिनी इत्यादि नदियों का रामायण में प्राप्त वर्णन कालिदास के नदियों के वर्णनों का बीजभूत है।

वाल्मीकि ने विभिन्न सन्दर्भों में हेमन्त, वर्षा, शरद् प्रभृति ऋतुओं का वर्णन किया है। इन वर्णनों में यथार्थता के साथ–साथ कल्पना का लालित्य भी मिश्रित है। कालिदास ने इन्हीं विकीर्ण वर्णनों से प्रेरणा प्राप्तकर ऋतुसंहार सदृश ललित मुक्तककाव्य की रचना की। प्रावृट् वर्णन का प्रथम छन्द जिसमें पावस को राजाओं का वेष बनाकर बिजलियों की पताकाएँ फहराते, बादलों के मतवाले हाथियों पर आरूढ होते हुए चित्रित किया गया है–

रामायण के किष्किन्धाकाण्ड के 28वें सर्ग का समृद्ध रूपान्तर है–

विद्युत्पताकाः सबलकमालाः शैलेन्द्रकूटाकृतिसन्निकाशाः ।
गर्जन्ति मेघाः समुदीर्णनादा मत्ता गजेन्द्रा इव संयुगस्थाः।।[2]

कालिदास ने इसी छन्द को निम्न रुपों में निबद्ध किया है–

ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरस्तडित्पताकोऽशनिशब्दमर्दलः।
समागतो राजवदुद्धतद्युतिर्घनागमः कामिजनप्रियः प्रिये! ।।[3]

इसीप्रकार ऋतुसंहार के प्रावृट् वर्णन का वह पद्य जिसमें नदियों को कुलटा स्त्रियों की भाँति तटवर्ती वृक्षों को ढहाती हुई सवेग समुद्र की ओर प्रभावित चित्रित किया गया है–

निपातयन्त्यः परितस्तटद्रुमान् प्रवृद्धवेगैः सलिलैरनिर्मलैः।
स्त्रियः सुदुष्टा इव जातविभ्रमाः प्रयान्ति नद्यस्त्वरितं पयोनिधिम् ।।[4]

इसका वर्णन रामायण के किष्किन्धाकाण्ड में कुछ इसप्रकार प्राप्त होता है–

नद्यः समुद्वाहितचक्रवाकास्तटानि शीर्णान्यपवाहयित्वा।
दृप्ता नवप्रावृतपूर्णभोगादृतं स्वभर्तारमुपोपयान्ति।।[5]

दर्प से युक्त नदियाँ अपने वक्ष पर चक्रवाकों को वहन करती हैं और मर्यादा में रखने वाले जीर्ण–शीर्ण कूलकगारों को तोड–फोड एवं दूर बहाकर नये पुष्प आदि के उपहार से पूर्ण भोग के लिए सादर स्वीकृत अपने स्वामी समुद्र के समीप वेगपूर्वक चली जा रही हैं । कालिदास ने आदिकवि के चित्र को ही अपने छन्द में उतार लियाहै 'प्रभिन्नवैदूर्यनिभैः' और वराङ्गनेव का कथन उनकी वैभवानुरक्त श्रृंगारी कल्पना की देन है यद्यपि वाल्मीकि ने भी अत्यन्त हरी घास के लिए वैदूर्यमणि का उपमान लिया है।

रामायण में वर्णित प्रावृट्–प्रसङ्ग में कतिपय ऐसे उल्लेख प्राप्त हैं जिनसे कालिदास को 'मेघदूत' के प्रणयन की प्रेरणा प्राप्त हुई होगी। राम वर्षा के आगमन से अपनी प्रिया सीता की याद से परेशान होते हैं उनकी काम–वासना जागृत होने लगती है–'मम शोकाभिभूतस्य कामसन्दीपनान् स्थितान्। लक्ष्मण से कहते हैं कि हे लक्ष्मण देखो, प्रवासी लोग अपने घरों को लौट रहे हैं और मानसवासलुब्ध चक्रवाक अपनी प्रियाओं के साथ प्रस्थान करने लगे हैं। प्रियाविहीनजन अपनी प्रियतमाओं का ध्यान कर रहे हैं। चौमासे के लिए आवश्यक वस्तुओं का सञ्चय कर लेने वाले कोसलाधिप भरत ने इस आषाढ़ी पूर्णिमा को अवश्य किसी व्रत का संकल्प लिया होगा–

निद्रा शनैः केशवमभ्युपैति द्रुतं नदी सागरमभ्युपैति।
हृष्टा बलाका घनमभ्युपैति कान्ता सकामा प्रियमभ्युपैति।।[6]

इसी क्रम में राम लक्ष्मण से आगे कहते हैं कि इस वर्षा ऋतु में बहुत गुण हैं शत्रुओं को परास्त कर और अपनी खोई स्त्री पाकर सुग्रीव आनन्द कर रहा है, किन्तु मेरी पत्नी हर ली गयी है और मैंराज्य से निष्कासित कर दिया गया हूँ। मैं नदी के टूटे कगार थी भाँति दुखी हूँ । मेरा शोक बढ़ रहा है और वर्षा ऋतु को शीघ्र समाप्त कर देने का कोई उपाय नहीं है। इस प्रसङ्ग में वर्षा की कामोछिपकता, प्रियावियुक्तजनों का घर लौटना, राम का स्वयं राज्य से निर्वासित होना तथा वर्षा से व्याकुल हो उठना और भरत के सन्दर्भ में 'आषाढ मीभ्युपगतः' का कथन ये सब ऐसे सूत्र हैं जिन्हे ग्रहणकर मेघदूत की प्रतिपाद्य वस्तु का नियोजन हुआ है। 'आषाढस्य प्रथमदिवसे', 'स्वाधिकारात्प्रमत्तः', 'कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पूनर्दूरसंस्थे' और प्रथम श्लोक में ही 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' का कथन ये उल्लेख इस अनुमान की पुष्टि करते हैं। रामायण में प्राप्त दवाग्नि से दग्ध काले पर्वतों पर मेघों के उतरने और ''रम्या नगेन्द्राः ———— प्रक्रीडितो वारिधरैः सुरेन्द्राः'' का उल्लेख कालिदास को ''मेघमाश्लिटसानुं वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं'' की कल्पना प्राप्त हुई होगी। सूर्य की किरणों द्वारा जल पीकर आकाश नौ महीने गर्भधारण करता है और बाद में रसायन–स्वरूप जल का प्रसव करता है–

नवमासधृतं गर्भं भाष्करस्य गभस्तिभिः।
पीत्वा रसं समुद्राणां द्यौः प्रसूते रसायनम् ।।[7]

आदिकवि के इस कथन का पल्लवित एवं परिवर्धित रूप ही ''धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः''7 प्राप्त होता है। बगुलों की पंक्तियों से युक्त जल का भार ले जाने वाले बादलों को पर्वतों के शिखरों पर विश्राम करते–करते आगे बढ़ने का कथन रामायण में प्राप्त होता है–

समुद्वहन्तः सलिलातिभारं बलाकिनो वारिधरा नदन्तः।
महत्सु श्रृङ्गेषु महीधराणां विश्रम्य विश्रम्य पुनः प्रयान्ति।।[8]

पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से विनती करते हुए कहता है कि जब पार्वती शिवजी का हाथ पकड़े हुए टहल रही हो तो वह आगे जाकर सीढ़ी के समान बन जायेगा जिससे उन्हें ऊँपर चढ़ने में आसानी हो–

भङ्गीभक्त्या विरचितवपुः स्तम्भितान्तर्जलौघः ।
सोपानत्वं कुरू मणितटारोहणायाग्रयायी।।[9]

मेघ के सोपानत्व की यह कल्पना रामायण के किष्किन्धाकाण्ड के निम्न श्लोक से प्राप्त हुई होगी–

शक्यमम्बरमारुह्य मेघसोपानपङ्क्तिभिः।
कुटजार्जुनमालाभिरलंकर्तुं दिवाकरम्।।[10]

इस समय मेघरूपी सीढ़ियों से चढ़कर सूर्य को कुटज तथा अर्जुन के फूलों की माला पहनाई जा सकती है। मेघूदत का प्रणयन वाल्मीकीय रामायण के आधार पर हुआ है इसकी पुष्टि के लिए किष्किन्धाकाण्ड के उन सर्गों को लिया जा सकता है जिनमें सुग्रीव द्वारा सीता की खोज के हेतु वानरों को चारों दिशाओं में भेजने का वर्णन किया गया है। चालीसवें सर्ग में प्राचीप्रेषणम् का प्रकरण है और उसके आरम्भ में ही सुग्रीव ने राम से अपने वानरों की प्रशंसा में कहा कि हे राम! मेरे राज्य में निवास करने वाले इन्द्र के समान बलवान् तथा इच्छानुसार रूप धारण करने वाले वानर आ गए हैं–

आगता विनिविष्टाश्च बलिनः कामरूपिणः।
वानरेन्द्राः महेन्द्राभा ये मद्विषयवासिनः।।[11]

मेघदूतम् में यक्ष मेघ की प्रशंसा करते हुए कुछ इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करता है–

जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।[12]

इच्छा के अनुसार रूप धारण करने के अतिरिक्त 'महेन्द्राभा' और 'मघोनः' का मार्ग निर्देश दिया है उसी रीति से यक्ष ने भी मेघ को मार्ग का निर्देश किया है। एक उदाहण लिया जा सकता है प्राचीप्रेषणम् में सुग्रीव विनत नामक सेनापति से कहता है हे वानर श्रेष्ठ तुम एक लाख वानरों के साथ पूर्व दिशा में जाओं मार्ग में मिलने वाले सभी वनों, पर्वतों, नदियों में महारानी सीता तथा रावण का घर ढूँढते हुए जाना। भागीरथी, सरयू, कौशिकी, कालिन्दी, यामुन पर्वत, सरस्वती, सिन्धु, शोणभद्र नद तथा मही एवं कालमही नदियों के मध्य पड़ने वाले पर्वतों पर उनका अन्वेषण करना।
सोने–चाँदी की खानों में भूषित यवद्वीप से आगे जाने पर शिशिर पर्वत मिलेगा उसके ऊँचे– ऊँचे शिखर आकाश को छूते हैं और उस पर देवताओं तथा दानवों का निवास रहता है। उसकी कन्दराओं, झरनों और वनों में यशस्विनी सीता तथा रावण को खोजना। उसके बाद जिसका जल लाल रहता है उस अगाध जल वाले और द्रुतवाही शोणभद्र, नदी पर जाना। तत्पश्चात् समुद्र के पार उस प्रदेश में जाना जहाँ सिद्ध चारण रहते हैं। वहाँ सभी तीर्थों और वनों में जाकर सीता और रावण का पता लगाना।
इस उदाहरण से आभास मिलता है कि यक्ष ने मेघ को अलका तक पहुँचाने के लिए जैसे निर्देश दिए हैं और जिस शैली का प्रयोग किया है उनमें सुग्रीव की निर्देश–शैली का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। 'दक्षिणा प्रेषण' प्रकरण में इसीप्रकार प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। 'दक्षिणा प्रेषणम्' प्रकरण में इसी प्रकार वानरों को दक्षिणदिशा में भेजते हुए पथ निर्देश किया गया है। इसीप्रकार 'प्रतीचीप्रेषणम्' तथा उदीचीप्रेषणम्' नामक सर्गों में भी वानरों को भेजकर सुग्रीव द्वारा यह बताया गया है कि उन्हें किस मार्ग से जाना पड़ेगा और मार्ग के कौन–कौन से पर्वत, समुद्र या आश्रम मिलेंगे। उत्तर दिशा की तरफ जाने वाले वानरों को कैलास स्थित कुबेर के भव्य भवन का परिचय इस प्रकार प्राप्त होता है–

तं तु शीघ्रमतिक्रम्य कान्तारं रोमहर्षणम्।
कैलासं पाण्डरं शैलं प्राप्य हृष्टा भविष्यथ।।
तत्रपाण्डरमेघाभं जाम्बूनदपरिष्कृतम्।
कुबेरभवनं रम्यं निर्मितं विश्वकर्मणा।।

शीघ्रतापूर्वक उस भयानक मैदान को पारकर आप श्वेत रंग से कैलास पर्वत को देखकर प्रसन्न होगें। विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया कुबेर के लिए रमणीय भवन सोने से सुसज्जित तथा श्वेतमेघ के समान स्थित है। वहाँ पर एक विशाल सरोवर स्थित है जिसमें कमल खिले रहते हैं,हंस, कारण्डव इत्यादि पक्षी कूजन करते रहते हैं। वहीं पर अप्सराएँ विहार किया करती हैं।
कैलास पर्वत की शुभ्रता मेघदूत में ''राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः'' के रूप में परिष्कृत हो गई हैं। 'विशालानलिनी' वाली पोखरी का संस्कार यक्ष के भीतर स्थित उस वापी के रूप में हुआ है जिसमें चिकने वैदूर्यमणि की डंठल वाले सुनहरे कमल खिले हैं और जिसमें हंस सुखपूर्वक विहार करते हैं–

वापी चास्मिन्मरकतशिलाबद्धसोपानमार्ग
हैमैश्छन्ना विकचकमलैः स्निग्धवैदूर्यनालैः।
यस्यास्तोये कृतवसतयो मानसंसन्निकृष्टे ।
नाध्यास्यन्ति व्यपगतशुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसाः।।[13]

उदीचीप्रेषणम् प्रकरण में क्रौञ्च तथा मैनाक पर्वतों के बाद पुनीत उत्तर कुरु प्रदेश के पर्वतीय अञ्चलों में निवास करने वाले किन्नर सिद्धादि के जीवन यापन का जो वर्णन प्राप्त होता है उसका प्रतिबिम्ब मेघदूत में वर्णित अलकानिवासी यक्षों के ऐश्वर्यशाली जीवन के रूप में अवतरित हुआ हैं। उदाहरण के लिए किष्किन्धाकाण्ड को निम्न श्लोकों के गृहीत किया जा सकता है।–

मनः कान्तानि माल्यानि फलन्त्यत्रापरे द्रुमाः।
पादानि च महार्हाणि भक्ष्याणि विविधानि च।।
स्त्रियश्च गुणसम्पन्ना रूपयौवनलक्षिताः।
गन्धर्वाः किन्नराः सिंद्धा नागा विद्याधरास्तथा।
रमन्ते सहितास्तत्र नारिभिर्भास्करप्रभाः।
सर्वे सुकृतकर्माणः सर्वे रतिपरायणाः।
सर्वे कामार्थसहिता वसन्ति सह योषितः।
गीतवादित्रनिर्घोषः सोत्कृष्टहसितस्वनः।।

उपर्युक्त श्लोकों का प्रभाव उत्तरमेघ के बाहर श्लोकों में प्राप्त होता है। उत्तरमेघ के अलका के ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का जो वर्णन कालिदास ने किया वह रामायण के सुन्दरकाण्ड के पाँचवे तथा छठें सर्ग में रावण के महल तथा रावण का जो विलास–वर्णन हुआ है, उनसे काफी साम्य है। यक्ष के भवन का वर्णन रावण के भवन–वर्णन से भी घनिष्ठ साम्य रखता है। इसीप्रकार विरहिणी सीता का जो चित्रण रामायण में प्राप्त होता है मेघदूत के विरहिणी यक्षिणी का वही चित्रण प्राप्त होता है। सीता 'एकवेणीधराशय्या ध्यानं मलिनमम्बरम् ' है तो यक्षिणी की भी एक ही चोटी यक्ष ने बाँध रखी है जो वहीं मिलने पर पुनः खोलेगा –

गण्डा भोगात्कठिनविषयमामेकवेणीं करेण।'

शोकसंतप्ता सीता से अपना परिचय देते हुए हनुमान् कहते हैं कि–

वैदेहि कुशली रामः स त्वां कौशलमब्रवीत् ।

इसीप्रकार यक्षिणी से भी मेघ पहले यक्ष का ही संवाद सुनता है।

'अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि मेघदूतम् के प्रणयन में कालिदास को सीता अन्वेषण प्रसङ्ग से प्रेरणा प्राप्त हुई। मेघदूत का यह श्लोक इस कथन की पुष्टि करता है।

इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य संभाव्य चैवम् ।
श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता सौम्य सीमन्तिनीनां
कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात्किञ्चिदूनः।।[14]

कालिदास के सम्पूर्ण काव्य पर आदिकवि का प्रभाव किसी न किसी रूप में स्पष्टत रूप से दिखाई पड़ता है। अयोध्या, लंकापुरी इत्यादि का वर्णन जिस रूप में रामायण में प्राप्त होता है उसका परिवर्धित स्वरूप कालिदास की नगरी वर्णन के प्रसंग में प्राप्त होता है। रावण का भवन रत्न–प्राचुर्य से भरा ऐसा प्रतिभासित होता था जैसा स्वर्ग ही धरती पर उतर आया हो–

'महीतले स्वर्गमिव प्रकीर्णं श्रिया ज्वलन्तं बहुरत्नकीर्णम्'[15]

इसका वर्णन मेघदूत में इसप्रकार प्राप्त होता है–

'शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम् ।[16]

रघुवंश के सोलहवें सर्ग में अयोध्या की दुर्दशा का जो वर्णन किया गया है वह रामायण में वर्णित अयोध्या तथा इतर नगरियों की समृद्धि का विलोम ही दिखाई पड़ता है। रत्नों, मणियों, नृत्य,ससंगीत इत्यादि की प्रचुरता का सन्निवेश रामायण में वर्णित समस्त नगरियों के वैभवपूर्ण जीवन में हुआ है। कालिदास ने भी भिन्न–भिन्न सन्दर्भों में वैभव विलास का जो वर्णनीय चित्र अंकित किया है उसमें वाल्मीकि का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

वाल्मीकि ने प्रकृति तथा ऋतुओं के वर्णन में प्रणयशीला योषिताओं से उपमाएँ ग्रहण की हैं कालिदास ने भी इसी पद्धति का अनुसरण किया है। वनों, उपवनों का जो वर्णन रामायण में प्राप्त होता है उसमें प्राकृतिक दृश्यों के साथ साथ कामोद्दीपन के तत्त्व भी प्राप्त होते हैं राम शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं–

दर्शयन्ति शरन्नद्यः पुलिनानि शनैः शनैः
नवसङ्गमसंव्रीडाजघनामीव योषित :।।17
मीनोपसंदर्शितमेखलानां नदीवधूनां गतयोऽद्य मन्दाः।
कान्तोपभुक्तालसगामिनीनां प्रभातकालेष्विव कामिनीनाम्। 18

कालिदास का रूपसौन्दर्य वर्णन भी वाल्मीकि का परिवर्धित रूपान्तर है। सीता से प्रणय–प्रार्थना करते हुए रावण कहता है कि हे सुन्दरि! मेरी समझ से रूप की सृष्टि करने वाले विधाता ने तुम्हारी रचना करने के बाद नई रचना का काम बन्द कर दिया क्योंकि तुम्हारी जैसी सुन्दरी संसार में ओर नहीं है। हे वरानने! चाहे स्वयं ब्रह्मा ही क्यों न हो। तुम्हारी जैसी रूप यौवनशालिनी सुन्दरी पाकर उनका मन भी चञ्चल हुए बिना नहीं रह सकता । रावण ने सीता को 'सीतारत्न' नाम से सम्बोधित किया है। कालिदास ने यक्षप्रिया को जो 'सृष्टिराद्येव' धातुः' बताया है उसमें आदिकवि के 'त्वां कृत्वोपरतो मन्ये रूपकर्ता स विश्वसृट् ' की ही प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है। कालिदास नारी सौन्दर्य में वीर्यक्षोभकारित्व को आवश्यक मानते है। इसका उदाहरण वाल्मीकि के इस कथन में प्राप्त होता हैं।

त्वां समासाद्य वैदेहि रूपयौवनशालिनीम् ।
कः पुमानतिवर्तेत साक्षादपि पितामहः।।

इसप्रकार सीता का स्त्रीरत्नत्व शकुन्तला के स्त्रीरत्नसृष्टिपरा में अधिक मनोज्ञता से उतर आया है। रावण की निजी शाला में विभूषित सहस्त्रों सुन्दरियों को हनुमान् ने देखा जिसका वर्णन इसप्रकार है–

रावण की ये समणियाँ बिछौने पर सोई हुइ थीं वे मद्यपान कर क्रीड़ा करती हुई सो गई थी वह शयनागार उस कमलवन के समान दिखाई दे रहा था जिसमें भ्रमर तथा हंस दिनभर बोलकर रात में चुप हो गए हो। उन स्त्रियों के दाँत पर दाँत चढे हुए थे आँखे बन्द थीं, उनके श्वास से कमल की गन्ध आ रही थी उन स्त्रियों के मुखकमल को देखकर भौंरे अवश्य ही उनसे प्रेम की प्रार्थना करते होंगे। यही भाव अभिज्ञानशाकुन्तल में देखने को प्राप्त होता है।

करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं ।'[19]

कोई सुन्दर स्तनों वाली नारी पटह बाजे को लिपटा कर इसप्रकार सोई हुई थी मानों बहुत काल के बाद पति को पाकर छाती से उसे लिपटाकर सो गई हो।

अठ्ठारहवें सर्ग में रावण के अशोक वाटिका में जाने का वर्णन हुआ है। जिसप्रकार बादल के साथ बिजली चलती है, उसी प्रकार नशे की खुमारी में भरी हुई रावण की प्रियाएँ उसके साथ चल रही थी। उनके अङ्गराग छूट गये थे,चोटियाँ खुली हुई थीं। गले का हार, केयूर इत्यादि गहने अपने स्थान से हट गए थे। वे पसीने से भींग गई थीं। वे सभी शुभाननाएँ मादकता और नीद के कारण लड़खड़ा रही थीं। उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि रामायण मे जगह जगह पर सुरा तथा सुन्दरियों नृत्य संगीत आदि का प्रमुख रूप से वर्णन प्राप्त होता है। ये वर्णन कालिदास के लिए मार्ग दर्शक बने होंगे। सामन्तीय समाज की माँग आदिकवि के द्वारा प्रस्तुतीकृत इन आदर्शों के मेल में पड़ने के कारण उन्हें सपदि स्वीकार्य सिद्ध हुई।

वियोग–वर्णन का मार्गदर्शन भी कालिदास को आदिकाव्य से प्राप्त हुई है। विरहिणी सीता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सीता के अंगों में भूषण की जगह मैल लगा था, आभूषण धारण करने योग्य होती हुई भी वे आभूषण नहीं धारण किए हैं। कीचड़ में लिपटी कमलिनी की भाँति वे सुन्दर भी प्रतीत होती थी और असुन्दर भी। राहुग्रस्त चन्द्रमावाली पूर्णिमा रात्रि के समान, पाले से मारी हुई कमलिनी के समान, उबटन इत्यादि न लगाने से कृष्ण पक्ष की रात के समान पतिशोकातुरा सीता दिखाई पड़ रही थीं। एक लम्बी वेणी उनकी पीठ पर लटकी हुई थी। भूखी रहती थी, मैले वस्त्र पहनती थीं, एक चोटी धारण किए भूमि पर शयन करती थीं, दिन रात चिन्ता में मग्न रहती थी इसीलिए रावण सीता से अनुनय विनय करता है–

एकवेणीधराशय्या ध्यानं मलिनमम्बराम्
अस्थानेऽप्युपवासश्च नैतान्यौपयिकानि ते।।
महार्हाणि च पानानि शयनान्यासनानि च।
गीतं नृत्तं च वाद्यं च लभ मां प्राप्त मैथिलि।

उपर्युक्त उदाहरण में यक्ष–प्रिया तथा शुकन्तला की विरहावस्था के चित्रण में सीता की इस दशा का प्रतिबिम्ब स्पष्टरूप से देखने को मिलता है। कुमारसम्भवम् महाकाव्य में रतिविलाप का जो वर्णन प्राप्त होता है।उसकी प्रेरणा वाल्मीकि रामायण में मन्दोदरी ने रावण की मृत्यु पर जो मर्मविदारक विलाप किया है,उससे प्राप्त हुई होगी।वैसे ही, अरण्यकाण्ड के 'रामोन्माद' 'राघवविलाप' इत्यादि सभी में वर्णित सीताहरण–जन्य राम के विलाप में रघुवंश के अजविलाप के प्रेरणा सूत्र भी सन्निहित हैं।

वाल्मीकि ने नारी रूप वर्णन में कोई चमत्कारजनक कल्पना नहीं की है कनकवर्णा, चन्द्रानना, पद्मानना, पद्मपलाशाक्षी, विशालाक्षी, सुभ्रू, सुमध्या, बिम्बोष्ठी इत्यादि विशेषणों का प्रयोग हुआ है और सीता की जांघों के लिए कदली,हाथी की सूँड़ इत्यादि तथा स्तनों के लिए बिल्वफल, तालफल इत्यादि उपमान प्राप्त होते हैं। अन्य प्रसङ्ग में स्तनों की उपमा स्वर्ण कलश से दी गई है कालिदास का रूप वर्णन वाल्मीकि की तुलना में निश्चय ही अधिक सरस लालित्यपूर्ण तथा कल्पना रमणीय है। उपमाओं के प्रयोग में भी कालिदास आदिकवि के ऋणी माने जाएगें यद्यपि उनकी उपमायें संस्कृत जगत् में अपूर्व ख्याति प्राप्त कर चुकी है।

इस आधार पर यह स्पष्ट होता है कि कालिदास के ऊपर महर्षि वाल्मीकि का प्रभाव पूर्णरूपेण हुआ है। दोनों कविपुंगवों की काव्य चेतना अलग–अलग प्रकार की है। जैसे उनका समाज एवं परिवेश भी भिन्न है। इसी कारण कालिदास ने सौन्दर्य एवं प्रणय जैसा मादक चित्रण किया है वैसा वाल्मीकि में उपलब्ध नहीं होता है फिर भी कालिदास के ऊपर आदिकवि का ऋण है इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है।

सन्दर्भ

1. अभि0– अंक–5
2. वा0रा0–4ण्8ण्0
3. ऋतुसंहार–1.1
4. ऋतुसंहार–2ण्7
5. वा0रा0–4.28.25
6. वा0रा0– 4.28.25
7. मेघदूतम्
8. वा0रा0– 4.28.22
9. पूर्वमेघ– 64
10. वा.रा.–4.28.4
11. वा.रा.–4.40.2
12. पूर्वमेघ– 6
13. उत्तरमेघ–16
14. मेघदूतम् उत्तरमेघ –37
15. वा.रा.–6.7.6
16. उत्तरमेघ– 30
17. वा0रा0–4.30.46
18. वा0रा0–4.30.55
19. अभिज्ञानशाकुन्तलम् –1.22